आपातकाल

में

सृजन फुलवारी

सुश्री अलका चौधरी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सुश्री अलका चौधरी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-196-1
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, सुश्री अलका चौधरी
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ALKA CHOUDHRY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेंगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	वक़्त की ये दरकार है	6
2.	एक राजा हुआ एक रानी हुई	7
3.	अब तो आजा मेरे यार	8
4.	ताल से ताल	9
5.	वो पत्थर का दिल था	10
6.	होंठ चुप और वो ख़फ़ा भी नहीं	11
7.	हमारा दिल	12
8.	इकरार कर लिया	13
9.	हम कामना करें	14
10.	फूल सहमें से	15
11.	हजार बातें कहानियाँ हैं	16
12.	बंद पलको में ख़ुशी	17
13.	हाँ नारी नारी हूँ	18
14.	इधर से उधर तक	19
15.	मुस्कुराता जीवन हो	20
16.	वर्क फ्रॉम होम	21

वक़्त की ये दरकार है

हम सब मिलकर कोरोना से लड़ने को तैयार हैं।
इक्कीस दिन घर में ही रहेंगे, वक़्त की ये दरकार है॥

यही वक़्त है संकल्पों का, स्व अनुशासन रखना है,
बना दूरियां इक दूजे से, घर में अपने रहना है।
नाते रिश्ते संबंधो को, और हमें दृढ़ करना है,
जीवन के अपने अनुभव साझा अपनों से करना है।
बहुत हो गई आपाधापी, रूककर तू चिंतन कर ले,
कुछ दिन की ही बात है ये तो, संग अपने परिवार है।

साफ सफाई घर की रखकर बीमारी से बचना है,
संक्रमण का जाल बिछा उसे तोड़ के आगे निकलना है।
छींक अगर खांसी आ जाये, अपने मुँह को ढकना है,
घर में रहकर शुद्ध सात्विक सादा भोजन करना है।
अफवाहों से दूर रहो तुम सच को अंगीकार करो,
अपने हाथों को साबुन से धोना बारम्बार है।

चित्र बनाओ घर पर रहकर, रक्षा पौधों की कर लो,
बचपन को तुम याद करो, लूडो कैरम चौपड़ खेलो।
योग करो नित घर में अपने गाने भी तो सुनना है,
आसपास के लाचारों की कर सकते हो मदद करो।
कालाबाजारी से बचना ईश्वर की भी तुम खबर रखो,
बात मान लो हित में हमारे सख़्त हुई सरकार है।

प्रकृति भी सुन तड़प रही थी, उसको भी आराम दो,
धुँए शोर गुल से जलती थी, उसको भी विश्राम दो।
जान की बाजी लगा रहे उन वीरों का अभिनन्दन है,
भारत माता के सपूत सच्चे उन सबका वंदन है।
दिखलाना है दुनिया को, तप बल हिम्मत और साहस को,
डटकर हम आगे आये है, महामारी की हार है।

एक राजा हुआ एक रानी हुई

होठ चुप आँख से सब कहानी हुई।
एक राजा हुआ एक रानी हुई।

ये सफर इश्क का इस कदर बढ़ चला,
तेरी चाहत में मैं तो दीवानी हुई।

आ खड़े हो गए वो मेरे सामने
शर्म से हाय मैं पानी पानी हुई।

मायने शक्लों सूरत के होते नहीं
दिल से दिल मिल गये शादमानी हुई।

प्यार ही प्यार रहता जहाँ हर जगह,
दिल मुहब्बत की एक राजधानी हुई।

धड़कने भी मेरी ना मेरी अब रही,
देखते देखते क्या सयानी हुई।

वो छोड़ती है ना मुझको अकेले कभी
ख्वाबों से मेरी यारी पुरानी हुई।

अब तो आजा मेरे यार

हर मौसम मौसम मौसम मौसम महका है प्यार,
दिल दिवाना बोले अब तो आजा मेरे यार।

तुम गीतों के राजकुंवर हो मै ग़ज़लों कि शहज़ादी
छंद बंधे बंधन मे सारे, हर बंदिश जीवनसाथी।
साज़ सुरीला मैं बन जाती, झंकृत मन के तार।
हर मौसम मौसम मौसम मौसम महका है प्यार,
दिल दिवाना बोले अब तो आजा मेरे यार।

बातों मे तुम साँसो मे तुम दिल कि हर एक धड़कन मे तुम
अधिकारों मे मनुहारों मे होठों कि मुस्कान मे तुम
होली ब्रज के जैसी मेरी जीवन है त्यौहार।
हर मौसम मौसम मौसम मौसम महका है प्यार,
दिल दिवाना बोले अब तो आजा मेरे यार।

तेरे बिन दुनिया ये सुनी दिल भी मेरा चैन खोता है
आँखों ही आँखों मे छुपकर दीवाना दिल रोता है
कैसे कहे अनमोल ये सच है, तू मेरा संसार।
हर मौसम मौसम मौसम मौसम महका है प्यार,
दिल दिवाना बोले अब तो आजा मेरे यार।

ताल से ताल

ताल से ताल वक़्त से मिलाना हमें,
रोशनी हौसलो की जलाना हमें।

कारवाँ आफ़तो का चला आ रहा,
दांव पर है वतन जो बचाना हमें।

साथ वादा करो हर नियम पर चलें,
दूर रहकर भी रिश्ता निभाना हमें।

घर पे ही सब रहो और सुरक्षित रहो,
क्योंकि ये आपदा को भगाना हमें।

जंग के सब सिपाही तेरे साथ हैं,
उनके ऋण को कभी ना भूलाना हमें।
ना रहे दुःख ना ग़म हो यही दिल कहे,
हँसते रहना सभी को हसाना हमें।

हो सके तो मदद आप उनकी करो,
भूक से जो तड़पते खिलाना हमें।

सब मिले आज अलका प्रतिज्ञा करें,
ठान जड़ से कोरोना मिटाना हमें।

वो पत्थर का दिल था

वो पत्थर का दिल था पिघलता भी कैसे
मुहब्बत के दामन में जलता भी कैसे।

नहीं कोई चेहरा था चेहरे पे उसके
जमाने के संग संग वो चलता भी कैसे।

फिजाओ में इतना जहर घुल रहा है,
वो कमरे से बाहर निकलता भी कैसे।

बुझी आग को फिर हवा दे रहे है,
सियासी नशा है उतरता भी कैसे।

भरोसा किया पर दगा ही मिला है
मेरा दिल ये पागल सम्हलता भी कैसे।

कमतर लगे है हर लफ्ज मुझको,
मेरा दर्द गीतो मे ढलता भी कैसे।

वो जिद पे था अपनी मै जिद पे थी अपनी
बता अलका कोई बदलता भी कैसे ।

होंठ चुप और वो ख़फ़ा भी नहीं

होंठ चुप और वो ख़फ़ा भी नहीं।
इससे बढ़कर कोई सज़ा भी नहीं।

जुर्म क्या है जरा बता भी दो,
कह रहे हो हुई ख़ता भी नही।

अब तलक टिसता है रह रहकर,
ज़ख्म तो ज़ख्म है भरा भी नहीं।

दर्द दिल में बसर किया करता।
कोई मरहम कोई दवा भी नहीं।

अश्क़ ने ही निभाई यारी है,
कोई शिकवा नहीं ग़िला भी नहीं।

फासले तो सदा मिला करते,
राह उल्फत की तो जुदा भी नहीं

जिंदगानी बड़ी अजब अलका
दिल में किसके क्या पता भी नहीं।

हमारा दिल

हमारा दिल कभी हमसे, शिकायत भी नहीं करता।
हक़ीक़त जानता है सब, बगावत भी नहीं करता।

नहीं जीने कभी देता, नहीं मरने भी देता है,
गुजर जाने की हद से वो, हिमाकत भी नहीं करता।

मुहब्बत की नहीं जाती, ये तो बस हो ही जाती है।
इसी सच की ज़माना क्यूँ वकालत भी नहीं करता।

ख़ुशी देकर ख़ुशी मिलती सुकूँ दिल को भी मिलता है।
ख़ुशी की क्यूँ कभी कोई हिफाज़त भी नहीं करता।

मुहब्बत की कहानी ही बयां करती निगाहेँ फिर,
नज़र से फिर मिला नज़रे, शरारत भी नहीं करता।

ख़ताएँ हो कभी कोई ख़फ़ा हो जाये गर अलका।
मनाना रूठना तो क्या ज़मानत भी नहीं करता।

इकरार कर लिया

इकरार कर लिया जब इनकार नहीं होगा।
बिन गुल खिले चमन कभी, गुलज़ार नहीं होगा।

दुनिया का हर सितारा, आ बैठा पास में है,
सुन प्यार से भी प्यारा त्यौहार नहीं होगा।

वो जान है हमारी अरमान भी हमारा,
सुन यार सा मेरे कोई दिलदार नहीं होगा।

इस दिल को ना सुकूँ है, ना चैन ही मिलेगा,
जब तक हमें तुम्हारा दीदार नहीं होगा।

मेरे माथे की ये बिंदिया तेरे नाम से है रोशन,
साजन बिना तुम्हारे श्रृंगार नहीं होगा।

है पाक़ीज़ा मुहब्बत, नेमत है ये खुदा कि.
चाहत अगर जिस्म कि स्वीकार नहीं होगा।

बह जाये दर्द में कभी, कभी खुशियों कि रवानी.
अंजाम कि जो सोचे वो प्यार नहीं होगा।

हम कामना करें

समग्र स्वास्थ्य की हम कामना करें,
स्वस्थ विश्व हो सारा ऐसी प्रार्थना करें,
स्वस्थ्य रहें सभी स्वस्थ्य प्राण वायु मिले,
मन भाव रहें स्वस्थ्य सभी के साधना करें|

ह्रदय को करें उदार, संयम ही हो गहना,
पीड़ित मानवता के लिए जीना मरना,
कोरोना का विनाश हो हम कामना करें|

सफाई का रखे ध्यान और रहें रोग मुक्त,
संतुलित आहार और नित योग आरोग्य युक्त,
औषधियां भी अमृत हो आराधना करें|

धर्मशील बने, हम सब हो जायें सदाचारी,
क्रियाशील हो.और हो बन जाये परोपकारी,
हिम्मत से मिल विपदा का सामना करें।

हो स्वच्छ स्वस्थ्य भारत और रहे खुशहाल,
वसुधैव-कुटुम्बकम हो पूरे जग में बहाल|
प्रकृति से सर झुकाकर हम याचना करें।

फूल सहमें से

फूल सहमें से, बहुत खुश खार है
प्यार कि बातें नहीं तकरार है।

ज़ब अहं से चूर हर रिश्ते मिले,
साथ रहना चार दिन दुश्वार है।

जड़ जमाता जा रहा है स्वार्थ यूँ,
टूटते हर रोज़ अब परिवार है।

नौजवां भटके राह भटकी हुई,
काम कि बातें सभी बेकार है।

क्यूँ हुनर सीखा नहीं चालाकी का,
इसलिये बेबस डरा लाचार है।

जान पाए हो क्या तुम कर्त्तव्य को,
बात में हर बात में अधिकार है।

दोस्ती करना जरा तुम सोचकर,
पीठ पीछे वार करते यार है।

सनसनी और हादसे, धोखाधड़ी,
खून से ही तो सने अख़बार है

देश का चैनो अमन जो लूटते ,
ये सभी 'अलका', सियासतदार है।

हजार बातें कहानियाँ हैं

हजार बातें कहानियाँ हैं।

जो तेरे मेरे ही दरमियाँ हैं।

है दर्द बेदर्द सुन कभी तो,
कभी है शोखी नादानियाँ हैं।

ख्याल में है कभी ख्वाब में,
ये प्यार की सब निशानियाँ हैं।

सवाल का हर जवाब है फिर,
क्यूँ मांगते सब गवाहियाँ हैं।

नहीं कहीं मन लगे हमारा,
है शाम ए ग़म ये उदासियाँ हैं।

जहाँ मुहब्बत का वास होता
तो रोज होती दिवालियाँ हैं।

भुलाये कैसे ये प्यार अलका,
जो आँख की बस रवानियाँ हैं।

बंद पलको में ख़ुशी

बंद पलको में ख़ुशी, ग़म को छिपाया जाए,
आँख में ख्वाब करीने से सजाया जाए।

हर मुरादें जो हों, बुजुर्गो की पूरी करना ,
इश्क़ की रस्म को कुछ ऐसे निभाया जाए।

भागना छोड़ दो दौलत के पीछे पीछे तुम,
जिंदगानी में सुकूँ चैन कमाया जाए।

वतन की खतिर जाँ दे दी, जिन सपूतों ने,
एक दिया उनके नाम रोज जलाया जाए।

यूँ सियासत के साथ साथ चलेगा कब तक,
रिश्ता इंसानियत से भी तो बनाया जाए।

दूर रहना सदा नफ़रत से ये बुरी बला है,
चाहतो का नगर हसीन बसाया जाए।

हौसलो के ही 'अनमोल' साये में रहना,
आसमाँ को चलो मिल आज झुकाया जाए।

इधर से उधर तक

इधर से उधर तक, उधर से इधर तक,
मुहब्बत की बातें, नज़र से खबर तक।

लिखे जा रही हूँ, लिखे जा रही हूँ,
नहीं जानती मैं, अभी भी बहर तक।

नहीं रोक सकते, करो लाख कोशिश,
सम्हलते सम्हलते, कदम हैं सफर तक।

दलालों! धरम के, खुदा भी बने हो,
लहू से शुरू तुम, सियासी गदर तक।

गलत बात भी फिर बहस कर रहे हो,
नहीं सुन रहे हो , नहीं है असर तक।

पुकारे कन्हैया कि बंशी मधुर धुन,
चलो गोपियों के विरह के नगर तक।

मुलाकात का सिलसिला अलका प्यारा,
चलो चाहतों के सुहाने शहर तक।

हाँ नारी नारी हूँ

हाँ नारी नारी हूँ जीवन की अधिकारी हूँ
दुर्गा लक्ष्मी सावित्री हूँ वक़्त पड़े झलकारी हूँ।

तोड़ विवशता के बंधन को, आगे बढ़ते जाना है
छूकर के आकाश मुझे, सपने सच करते जाना है।
सब्र सदाकत और इबादत कभी मीठी कभी खारी हूँ

दिल में ममता आँख में पानी ईश की रचना कहते हैं
शक्ति है अनमोल मुझमे उम्मीद के रंग रहते है
प्रेम की मूरत नेह की छाया साहस की अवतारी हूँ

माता बहन बेटी जग जननी सच्ची जीवन साथी भी
प्रातः की उजली किरणों में शाम की दीपक बाती भी
आहट हूँ स्वर्णिम जगत की पग पग मैं संस्कारी हूँ

वहशियत की अग्नि मैं फिर क्यूँ जलती जाती हूँ
निर्भया दामिनी जग मे कुचली गुड़िया मसली जाती है
बन चंडी संहार करो तुम सिँह की तो मै सवारी हूँ।

मुस्कुराता जीवन हो

खुशियाँ आती और जाती, मुस्कुराता जीवन हो।
जी लो हंसकर जिंदगानी, जो महकता सावन हो।।

हाल ए दिल अपना सुनाना, रूठ जाये तो मनाना,
कुछ भी नामुमकिन नही है, उम्मीदों के सपन सजाना,
ख्वाब बनकर के हकीकत, सज रहे मन आंगन हो।
जी लो हंसकर जिंदगानी, जो महकता सावन हो।
खुशियाँ आती और जाती, मुस्कुराता जीवन हो।।

सुख का या दुख का पिटारा, जिंदगी का खेल निराला,
सच से ना दामन छुड़ाना, प्रेम का हो बोलबाला,
इतनी सी दिल की तमन्ना, रिश्तों का मन बंधन हो।
जी लो हंसकर जिंदगानी, जो महकता सावन हो।
खुशियाँ आती और जाती, मुस्कुराता जीवन हो।।

भर दुआओं का खजाना, याद रक्खेगा जमाना,
कल पे कोई काम ना रख, कल क्या होगा कौन जाना,
लौट आते दिन सुहाने, मन भी मचलता बचपन हो।
जी लो हंसकर जिंदगानी, जो महकता सावन हो।
खुशियाँ आती और जाती, मुस्कुराता जीवन हो।।

वर्क फ्रॉम होम

कौन कहता है कि आराम कर रहे हैं,
हम सब घर पर ही काम कर रहे हैं।

कोरोना वाइरस कहां किसका सगा है,
लॉक डाउन भी तो बहुत लम्बा लगा है।
घर में अपने एक जगह चुन ली है मैंने,
अपने कर्त्तव्य कि ख़ुशी बुन ली है मैंने।
शासन के नियमों का भी सम्मान कर रहे हैं।

कौन कहता है कि आराम कर रहे हैं,
हम सब घर पर ही काम कर रहे हैं।

जिम्मेदारी से काम जिससे रूकावट ना हो,
पर एक ब्रेक भी जिससे थकावट ना हो।
मानसिक और शारीरिक हेल्थ का ध्यान है,
एक्सरसाइज हर दिन चेहरे पर मुस्कान है।
सुबह से लेकर शाम तक कर रहे है।

कौन कहता है कि आराम कर रहे हैं,
हम सब घर पर ही काम कर रहे हैं।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

छोटी-छोटी बातों में भी खुशियाँ ढूंढ़ना ही सफलता का मूल मंत्र है। और सफलता कभी न खत्म होने वाली सतत प्रक्रिया होती है, सफलता का कारवां, सकारात्मक सोच के साथ निरन्तर आगे बढ़ता है और आगे बढ़ता रहेगा... यही सोच के साथ अंतरा शब्द शक्ति ने आपातकाल में जब पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से लड़ रहा है और सब जगह भय और असुरक्षा का माहौल है ऐसे में नीरसता से बाहर निकलने के लिए सभी साहित्यकारों को एक नई ऊर्जा दी है।

इस बात को कोइ नकार भी नही सकता कि एक कलमकार के लिए सृजन ही जीवन है और संकट कि घड़ी में समय का सदुपयोग कैसे किया जाए इस हेतु लेखन के लिए अंतरा शब्दशक्ति कि सार्थक पहल सराहनीय है, लोगों में चेतना जागृत करने का उत्तम प्रयास है।

मैंने भी इस अवसर पर कुछ लिखने का प्रयास किया संक्षिप्त में ही कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कही है मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी कही हर बात जनमानस को थोड़ा गुदगुदाएगी तो कभी गहन चिंतन मनन करने पर मजबूर कर देगी। आदरणीय प्रीति समकित सुराना जी उनके प्रोत्साहन एवं अंतरा शब्दशक्ति परिवार को साधुवाद।

रचनाकार

सुश्री अलका चौधरी

Email- choudharyalka23@gmail.com
Mobile - 9827932802

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-196-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/